Volume-5, Issue-12, December - 2016 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Education

x<oky d lrr lkekftd vkfFkd fodkl e LoSfPNd lLFkkvk dh Hkfedk

Mk lfjrk iokj

प्रवक्ता, प्रौढ़ सतत् शिक्षा प्रसार विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल

KEYWORDS :

'kk/k lkjk'k

भारत जैसे विकासशील देश में एक अरब से अधिक जनसमूह के जीवन स्तर को सुधारना, उनमें प्रगति लाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। देश के विकास में सरकारी संगठन, गैर सरकारी संगठन एवं स्वैच्छिक संगठन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। जब हम विकास की बात करते है तो कुछ गांवों में आहार पहुंचाना, पानी की सुविधा उपलब्ध कराना, घर बनवा देना, व्यक्तियों को स्वास्थ्य सेवाऐं, किसी भी कार्य को करने के लिए ऋृण उपलब्ध कराना, बड़े बांध और उद्योग स्थापित करवा देना केवल यह सभी विकास नहीं है।

lgh ek;u e fodkl dk vFk

- व्यक्ति या समुदाय में आत्म विश्वास जगाना
- स्वावलम्बी बनाना
- समस्याओं के प्रति सही समझदारी पैदा करना
- समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं या सामूहिक रूप से पहल करने के लिए प्रेरित करना।
- एक–दूसरे के प्रति संवेदनशील और सहिश्णु बनाना तथा हर तरह की सूचनाओं और जीवनोपयोगी कानूनों से अवगत कराना ।

इन विकासात्मक गतिविधियों में स्वैच्छिक संगठन सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

iLrkouk

समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन की विधा से जुड़े हुए तमाम प्रयासों में एक विशिष्ट और अनूठा स्थान स्वैच्छिक प्रयासों का है। ये प्रयास अपने देश में एक लम्बे इतिहास के साथ जुड़े हुए है और इनमें व्यक्तिगत, संस्थागत व संगठन आधारित सभी तरह के प्रयास शामिल है। समाज में गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी व अन्य तमाम समस्याओं से जूझने के लिए इन स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं।

स्वैच्छिक शब्द का ऐतिहासिक अर्थ बिना किसी साधन के अथवा स्वैच्छा से कार्य करना माना जाता रहा है इसका अंग्रेजी शब्द "वॉलेन्टरी" इस बात का पर्याय बन गया है कि लोग अपने रहने खाने, भोजन, परिवार वहन की चिन्ता किये बिना सामाजिक परिवर्तन की कसक के बूत स्वैच्छिक विकास के प्रयासों में कूद पड़े। किन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है। स्वैच्छिक शब्द का अर्थ स्वैच्छिक विकास किये जाने वाले कार्यों से हैं जिसमें सरकारी हस्तक्षेप न्यूनतम होता है।

अपने देश के इतिहास में स्वैच्छिक विकास के प्रयासों की अहम भूमिका रही है इसको समझने के लिए एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन की आवश्यकता है प्रथम चरण में उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत में समाज सुधार के तमाम आन्दोलन देश में चले। इन आन्दोलनों में महिलाओं हरिजनों इत्यादि के प्रश्नों से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य का प्रश्न भी जुड़े रहे थे। इन्होंने एक विशिष्ट समाज सुधार की भूमिका निभाई, राजा राम मोहन राय ब्रह्म समाज फरदी आन्दोलन और क्रिश्चयन मिशनरी लोगों के प्रयास इस श्रेणी में लाये जा सकते हैं।

हमारा देश विकासशील देश है। विकास की गति को आगे बढ़ाने में अनेक सरकारी संगठन, गैर सरकारी संगठन तथा स्वैच्छिक संगठन अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

1- ljdkjh lxBu

सरकार द्वारा जो विकास की योजनाएँ किसी राज्य या क्षेत्र में संचालित की जाती है उनका क्रियान्वयन सरकारी संस्थाओं के माध्यम से किया जाता है। सम्पूर्ण परियोजना सरकारी कर्मचारियों द्वारा सरकारी नियमावली के अनुरूप पूर्ण की जाती है।

2- xj ljdkjh lxBu

गैर सरकारी संस्थाएं या गैर सरकारी संगठन वे संगठन है जो परियोजनाओं को क्रियान्वयन सरकार की नियमावली के अनुसार या सरकार के हस्तक्षेप में कार्यक्रम चलाती हैं। ऐसे संगइन अर्द्ध सरकारी संगठन कहलाते हैं।

3- LoSfPNd lLFkk,i ;k LoSfPNd lxBu

स्वैच्छिक शब्द का ऐतिहासिक अर्थ बिना किसी साधन के स्वेच्छा से कार्य करना माना जाता है। स्वैच्छिक शब्द का अंग्रेजी रूपान्तर वालेन्टरी इस बात का पर्याय बन गया है कि लोग अपने रहने खाने, परिवार वहन की चिन्ता किये बिना परिवर्तन की कसक के बूते स्वैच्छिक विकास के कार्यों में कूद पड़े। किन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है। स्वैच्छिक शब्द का वास्तविकता अर्थ स्वेच्छा से किये जाने वाले सामाजिक विकास के कार्यों से है जिसमें सरकारी हस्तक्षेप न्यूनतम होता है।

v/;;u {k=

उत्तराखण्ड के गढ़वाल मंडल में कार्यरत स्वैच्छिक संगठन।

mn~ns';

गढ.वाल के सतत सामाजिक आर्थिक विकास में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन।

x<oky e dk;jr lLFkk,i

9 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आये भारतवर्ष के 27 वें राज्य उत्तराखण्ड की भौगोलिक स्थिति मैदानी भागों से भिन्न है। पहाड़ी राज्य होने के कारण यहाँ मैदानों की अपेक्षा अलग तरह की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियाँ हैं । उत्तराखण्ड राज्य का 43.035 वर्ग किलोमीटर भू– भाग पर्वतीय, 7.448 वर्ग किलोमीटर मैदानी है तथा 34.65 वर्गकिलोमीटर भू– भाग वनाच्छादित है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या 10086292 है उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। उत्तराखण्ड की 90 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है। इसके अलावा उद्योग का एक बड़ा भाग वन संपदा पर आधारित है एवं हस्तशिल्प उद्योग भी सकिय है साथ ही पर्यटन एवं तीर्थाटन से भी लोगों को लाभ प्राप्त होता है।

वर्तमान समय में गढ़वाल में लगभग 5000 संस्थाएं कार्य कर रही है। कहीं इन संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले प्रयास सामाजिक सुधार के प्रयास के रूप में दिखते हैं। कहीं ये जनजागरूकता द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण के प्रति संचेतना फैलाते दिखते हैं, कुछ संस्थाओं द्वारा विभिन्न विषम परिस्थितियों में सहायता के प्रयास किये गये हैं। तो कहीं विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण देकर लोगों के जीवन स्तर में सुधार तथा आर्थिक स्थिति सुधार के प्रयास किये गये है।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

1- tu tkx:drk dk dk;Z

गढ़वाल में कार्यरत कुछ संस्थाएँ ऐसी हैं जो लोगों में जीवन विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने का कार्य करती हैं। जैसे अपने पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन की जागरूकता स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता। जनसंख्या नियंत्रण तथा शिक्षा के महत्व को बताकर शिक्षा के लिए जागरूक करना।

जन जागरूकता एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार के मुख्य उद्देश्य पर आधारित महिला उत्थान एवं ग्राम विकास संस्थान ब्रह्मखाल (उत्तरकाशी) में स्थित है। इस समय संस्था के द्वारा 5 बालबाड़ियाँ, 15 प्राथमिक पाठशालाएँ तथा एक जूनियर हाईस्कूल का संचालन किया जा रहा है तथा संस्था द्वारा समय–समय पर महिला जागृति शिविरों का आयोजन भी किया जाता है।

देहरादून में स्थापित रिलेक नामक संस्था के द्वारा जन जागृति के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये गये हैं। संस्था के प्रयासों से ही क्षेत्र में की जा रही अफीम की खेती पर रोक लग पायी। कोल्टा बन्धुवा मजदूरों की मुक्ति, कोल्टा महिलाओं की वैश्यावृत्ति पर रोक, चूना खनन पर रोक तथा सीमेन्ट फैक्टरियों को बन्द कराने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये गये।

2- izf'k{k.k dk dk;Z

कुछ स्वैच्छिक संगठन लोगों को उन्नत तकनीक से कृषि कार्य करने के लिये प्रशिक्षित करती हैं। स्थानीय संसाधनों के समुचित दोहन का प्रशिक्षण देती हैं तथा सिलाई, कढ़ाई, बुनाई तथा व्यावसायिक कार्यों के प्रशिक्षण द्वारा लोगों को स्वालम्बी बनाने में सहायक हैं।

बेरीनाग ग्राम स्वराज मण्डल नाम से स्थापित यह संस्था स्वरोजगार के लिये युवाओं एवं महिलाओं को प्रशिक्षण करने जैसा महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। संस्था द्वारा ऊन कातना, वस्त्र बुनना, चर्खा चलाना, हथकलघा, कुटीर एवं लघु उद्योग, पशुपालन एवं मौन पालन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं।

3- fodkl dk dk;Z

कुछ स्वैच्छिक संगठन विकास के कार्यक्रमों को चला रहे हैं। ग्रामीण विकास के लिये नित कई परियोजनाएँ तैयार की जा रही हैं जिससे ग्रामीण जनता का जीवन स्तर सुधर रहा है। ये संस्थाएँ दूरस्थ क्षेत्रों में बिजली, पानी तथा यातयात आदि समस्याओं के निराकरण के लिये कार्य कर रही हैं।

ग्रामीण सुधार एवं श्रमिक सेवा संस्थान (ग्रास) ने ग्रामीण विकास के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। संस्था ने घराट से विद्युत उत्पादन की तकनीक को विकसित किया है। इस प्रकार विकास की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में देहरादून की हैस्को नाम से स्थापित स्वैच्छिक संगठन भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्था द्वारा कम्पोस्ट खाद के निर्माण, लेन्टिना घास से फर्नीचर निर्माण का कार्य बायोमास का प्रयोग करना, घराट पनचक्कियों का सम्बद्धीकरण करके विकास की नई राह दिखाई है।

4- lekt d fiNM+s detksj oxZ d fodkl grq dk;Z

गढ़वाल में कार्यरत कुछ स्वैच्छिक संगठन समाज के अल्प संख्यक तथा कमजोर वर्ग के लिए कार्यक्रम चला रहे हैं। कई सस्थाएं समाज के उस वर्ग को ध्यान में रखकर अपने कार्यक्रम संचालित करती हैं जो लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत करते रहे हैं। कुछ ने श्रअपने कार्यक्रमों में महिला विकास तथा सशक्तिकरण को आधार बनाया है। कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं युवा वर्ग के विकास के लिये प्रयासरत हैं। कुछ संस्थाओं ने अपना लक्ष्य समूह वृद्धों तथा विकलांगों को बनाया है। ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत ऐसी योजनाएँ चलायी जा रही हैं जिससे काफी हद तक बेरोजगारी की समस्या का निराकरण हो सके तथा पलायन को रोका जा सके।

इस दिशा में भुवनेश्वरी महिला आश्रम नामक संस्था के प्रया सराहनीय रहे हैं। 1977 में स्थापित इस संस्था ने पर्वतीय क्षेत्र की नारी शक्ति को सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर कर राष्ट्रीय विकास में योगदान दिया है। नारी वर्ग की आर्थिक दुर्बलता को दूर करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योगों की स्थापना की है। साथ ही कृषि, पशुपालन में वैज्ञानिक दृष्टिको अपनाया है।

5- vkink iHkkfor {k=ks e dk;Z

कुछ स्वैच्छिक संगठन आपत्ति काल में प्रभावित क्षेत्र में अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। उनका कार्य क्षेत्र बाढ़ प्रभावित इलाके, भूस्खलन से प्रभावित क्षेत्र, भूकम्प से क्षतिग्रस्त क्षेत्र हैं।

इस प्रकार गढ़वाल में कार्यरत स्वैच्छिक संगठन गढ़वाल के हर ऐसे क्षेत्र में कार्यरत है जहां सरकारी परियोजनाएँ नहीं पहुँच पाती है। श्रीनगर में कार्यरत डी के डी संस्था के प्रयासों से केदार घाटी में आयी आपदा से प्रभावित लोगों के लिये अनेक विकासात्मक कार्यों का संचालन किया जा रहा है।सेवा संस्था एवं डी के डी के संयुक्त प्रयास से पुर्नस्थापन एवं पुर्ननिर्माण के कई महत्व पूर्ण कार्यों को सफलतापूर्वक संपादित किया जा रहा है।

fu"d"k

गढ़वाल में कार्यरत स्वैच्छिक संगठन सतत सामाजिक विकास, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन,सशक्तीकरण, सामाजिक जागरूकता, राजनैतिक जागरूकता, पशुकल्याण,आर्थिक एवं वित्तीय संसाधन प्रबन्धन, आधारभूत संरचना विकास, समुदायों के आजीविकोपार्जन के कार्यक्रम, सांस्कृतिक विरासत संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, विज्ञान व तकनीकी, मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं। स्वैच्छिक संगठन मानव जीवन के कल्याण व सुधार हेतु कानून के अनुपालन और कियान्वयन, नवीन नियम कानून और नीतियां बनवाने में भी सहयोग करती हैं।

l>ko

स्वैच्छिक संगठन सतत विकास हेतु निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं।

- शोध एवं दस्तावेजीकरण
- मानवीय संसाधन की क्षमता एवं कौशल वृद्धि
- सतत् विकास के सफलतम मॉडल निर्मित करना एवं उन मॉडलों को सरकारी भाग बनाने की जन पैरवी करना
- संपोशणीय विकास के नियमों के पालन हेतु जन दबाव बनाना।
- स्वैच्छिक संगठन जन मुद्दों को राजनैतिक पार्टियों के घोशणा पत्र में शामिल करवायें एवं उनके अनुपालन को सुनिश्चित करें
- कृशि एवं पर्यावरण के क्षेत्र में सम्पोशणीय विकास की अवधारणा से कार्य करने वाली संस्थाओं एवं व्यक्तियों को विशिश्ट सम्मान एवं उनके कार्यों का प्रचार–प्रसार करना।

lnHk

1. "स्वयं सेवी संगठन – कल और आज", सोसाईटी फोर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली।
2. पर्वतीय क्षेत्र का विकास, प्रगति 1986–87, पर्वतीय विकास विभाग, लखनऊ।
3. संगोष्ठि एब्सट्रेक्ट, पर्वतीय क्षेत्र के विकास में खादी एवं ग्रामोद्योगों का योगदान, 19 अप्रैल 1991।
4. वर्तमान उत्तराखण्ड, अंक तीन, जनवरी 1995
5. स्वयंसेवी संगठनों में प्रबन्धन, प्रिया नई दिल्ली।
6. स्वयंसेवी संस्थायें एवं स्थानीय मुद्दे, उपवन द्वारा प्रकाशित, लखनऊ।
7. डायरेक्ट्री ऑफ वालेन्ट्री ऑर्गेनाइजेशन, डब्ल्यु0डब्ल्यु0एफ0, नई दिल्ली।